सचित्र लोक-कथा-माला

'विशाल भारत', कलकत्ता—आत्माराम एण्ड संस ने 'सचित्र लोक-कथा-माला' प्रकाशित करके हिन्दी बाल-साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण कमी को दूर करने का सफल प्रयास किया है । छपाई-सफाई अच्छी है । हम इन पुस्तकों का स्वागत करते हैं ।

'मध्य-प्रदेश-सन्देश', ग्वालियर—सभी कथाएँ बड़ी मनोरंजक और शिक्षाप्रद हैं । उनमें कहानियों के तत्त्व मौजूद हैं और पाठकों को प्रारम्भ से अन्त तक वे तल्लीन रखती हैं । बड़े टाइप में छापी गई हैं जिससे न केवल बालक ही बल्कि प्रौढ़ नव-शिक्षित भी आसानी से पढ़ सकते हैं और उनसे लाभ उठा सकते हैं । छपाई-सफाई तो अच्छी है ही, कागज भी बढ़िया उपयोग में लाया गया है । आशा है पुस्तकें पाठकों को अवश्य पसन्द आयेंगी ।

'नवभारत', नागपुर—प्रसिद्ध प्रकाशक आत्माराम एण्ड संस ने लोक-साहित्य के प्रकाशन में जो बहुमूल्य योग दिया है, वह स्तुत्य है । उन्होंने भारत के प्रायः हर क्षेत्र की लोक-कथाओं को अलग-अलग प्रकाशित किया है । कथाओं को अधिक स्पष्ट करने के लिए यथास्थान सचित्र भी किया गया है जिससे उनकी उपयोगिता और बढ़ गई है । हम इन कथाओं का स्वागत करते हैं और प्रकाशक को बधाई देते हैं । केन्द्रीय और राज्य सरकारों का कर्तव्य है कि वह इन्हें अधिकाधिक संख्या में खरीदकर ऐसे साहित्य के निर्माण में सहायता पहुँचाएँ । आकर्षक गेट-अप और सुन्दर छपाई को देखते हुए मूल्य भी काफी सुलभ रखा गया है ।

'हिन्दू', मद्रास—प्रत्येक पुस्तकालय में इन पुस्तकों का होना आवश्यक है ।

मन्मथनाथ गुप्त, दिल्ली—खुशी की बात है कि इधर हिन्दी प्रकाशकों का ध्यान बाल-साहित्य की ओर गया है । अवश्य बाल-साहित्य के नाम से हिन्दी में कई बार बहुत घटिया साहित्य भी निकल रहा है, पर आत्माराम एण्ड संस के संचालक श्री रामलाल पुरी ने इस क्षेत्र में अच्छा कार्य किया है ।

'हिन्दी-प्रचारक', वाराणसी—आत्माराम एण्ड संस का विश्व-भर की लोक-कथाओं को प्रकाशित करने का प्रयास अभिनन्दनीय है ।

'अमर-ज्योति,' जयपुर—सभी संग्रह अधिकारी लेखकों द्वारा किए गए हैं । छपाई-सफाई बड़ी सुन्दर और आकर्षक है ।

●

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६

पश्चिमी अवध की लोक-कथाएँ

राजेन्द्रकुमार

दूसरा भाग

寄贈 昭和46年度科学研究費購入図書 東外大・東洋文化研 合同海外学術調査団 氏

東京外国語大学 157745 47.3.31 図書館蔵書

आत्माराम एण्ड संस

काश्मीरी गेट, दिल्ली

प्रसन्नता है कि हम किसी सीमा तक पाठकों का ध्यान भारत के लोक-साहित्य की ओर आकर्षित करने में सफल हुए हैं।

भारत के प्रत्येक प्रदेश की लोक-कथाओं के वैज्ञानिक और विचारात्मक ढंग से किए गए संग्रह हमने प्रकाशित किए हैं। इन कथाओं के द्वारा उस प्रदेश के निवासियों के हृदय का स्पंदन और उनके सरल जीवन का चित्रण सच्चे रूप में प्रकट होता है। सभी लोक-कथाएँ रोचक हैं, कौतूहल से पूर्ण हैं और अलौकिक हैं। प्रेम, घृणा, प्रतिहिंसा, साहस—सभी मानवी भावनाओं का दिग्दर्शन करने वाली ये कहानियाँ प्रायः सुखान्त हैं और उनके मूल में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना रहती है। आज हम देखते हैं कि भारत के लोक-मानस में अनन्त काल से परिव्याप्त ये लोक-कथाएं न केवल एशिया अपितु विश्व के अनेक सुसभ्य-सुसंस्कृत भूखण्डों के लोक-मानस और वहाँ के समृद्ध साहित्य में आत्मसात् हो चुकी हैं।

इन संग्रहों की कथाओं की भाषा सरल, सुबोध, जनपदीय लोकोक्तियों और मुहावरों से भरपूर और शैली अत्यन्त मोहक है।

पश्चिमी अवध की लोक-कथाओं में वहाँ की ग्यारह चुनी हुई मनोरंजक और शिक्षाप्रद लोक-कथाएं दी गई हैं जिन्हें पढ़कर जहाँ आपको आनन्द मिलेगा वहाँ पश्चिमी अवध के सम्बन्ध में कुछ नवीन तथ्यों का भी ज्ञान प्राप्त होगा।

आशा है हिन्दी-संसार, विद्वान लेखक और प्रकाशक के परिश्रम का स्वागत और सराहना कर इस महत्त्वपूर्ण वृहत् योजना को बल प्रदान करेगा।

—प्रकाशक

क्रम

१. साधु का पतन	.	१
२. बाला लखन्दर	.	४
३. दो हजार रुपए की किताब	.	१०
४. पिता की सीख	.	१५
५. दो भाई	.	१८
६. कुएँ की परियाँ	.	२१
७. सियार और घड़ियाल	.	२५
८. हंस और हंसिनी	.	२८
९. बादशाह खुदादोस्त	.	३२
१०. जुलाहे की मुर्गी	.	३७
११. चार दीयों की कहानी	.	४०